बिम्ब

सच निकला ढूंढने स्वयं को ।
झूठ के जटिल भंवरजाल में ॥

स्मित हास्य ग़ुम गया देखो ।
क्रूर नज़रों के हँसी-ठहाकों में ॥

शुभ्रता आत्मविश्वास रही खो ।
धूर्त कालिख के मायाजाल में ॥

सज्जनता निर्वस्त्र स्तब्ध हो ।
खड़ी दुर्जनता के कठघरे में ॥

अँधेरा भी दहल गया दोस्तों ।
कलयुगी इस चका-चौंध में ॥

एक-ओंकार के शुद्ध स्वरों तुम ।
कहाँ छिपे हो इस कोलाहल में?

समीर खांडेकर
१८. ०१. २०१४